7 अप्रैल, 2023 को काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में आयोजित "गज उत्सव" के अवसर पर माननीय राज्यपाल का संबोधन

भारत की माननीया राष्ट्रपति **श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी**,
माननीय केंद्रीय पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री **श्री भूपेंद्र यादव जी**,
राज्य के माननीय मुख्यमंत्री **डॉ. हिमंत बिस्व सर्मा जी,**
माननीय केंद्रीय राज्यमंत्री **श्री अश्विनी कुमार चौबे जी,**
राज्य के वन एवं पर्यावरण मंत्री **श्री चंद्र मोहन पाटोवारी जी**,
वित्त मंत्री **श्रीमती अजंता नेओग जी**,
कृषि मंत्री **श्री अतुल बोरा जी**,
एवं मेरे प्यारे भाइयों और बहनों,

सबसे पहले, अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति से **गज उत्सव** के इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए मैं माननीया राष्ट्रपति जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के "Project Elephant " की 30वीं वर्षगांठ पर आयोजित इस राष्ट्रीय 'गज उत्सव' कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए यहां उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का भी तहे दिल से स्वागत करता हूं।

मैं आज यहां विश्व विरासत स्थल काजीरंगा"नेशनल पार्कमें इस " ऐतिहासिक क्षण को देखकर बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं और असम राज्य को इस तरह के राष्ट्रीय कार्यक्रम की मेज़बानी करने का अवसर देने के लिए भारत सरकार के Project Elephant, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं।

प्राचीन काल से हाथी हमेशा हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अंग रहा है। इसलिए हाथी हमारे लिए पूजनीय हैं। हाथियों को वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत संरक्षित एक राष्ट्रीय विरासत पशु माना गया है। इसी उद्देश्य से “प्रोजेक्ट एलीफैंट” भारत में हाथियों और उनके आवासों की रक्षा के लिए एक केंद्र प्रायोजित योजना के रुप मे वर्ष 1991-92 में शुरु की गई थी।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य हाथियों के संरक्षण को बढ़ावा देना, उनके आवास और गलियारों की रक्षा करना और मानव-हाथी संघर्ष को रोकना है।

अनुकूल भौगोलिक स्थिति, विविधतापूर्ण स्थलाकृति और आदर्श जलवायु परिस्थितियों ने असम को जैव विविधता में बहुत समृद्ध बना दिया है। असम की वनस्पति मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय प्रकार की है जिसमें सदाबहार, अर्ध सदाबहार, नम पर्णपाती, पर्णपाती वन, घास के मैदान और

नदी के किनारे के जंगल शामिल हैं। इसलिए समग्र अनुकूल पर्यावरण की स्थिति को देखते हुए, असम राज्य भारत के अन्य राज्यों की तुलना में जंगली हाथियों की उच्चतम आबादी को आश्रय देने के लिए देश में दूसरा स्थान रखता है।

हाथी की आबादी के क्षेत्र में असम अग्रणी रहा है। असम में हमारे पास 317 अधिसूचित आरक्षित वन, 7 राष्ट्रीय उद्यान और 17 वन्यजीव अभयारण्य हैं। ये वन कुल मिलाकर हाथियों के लिए बेहतर आवासस्थव और भोजन प्रदान करते हैं

असम के विशिष्ट जंगल ने हाथि को बड़े पैमाने पर आश्रय और भोजन देने के लिए अनुकूल परिस्थितियां दी हैं। इस दृष्टि से काजीरंगा नेशनल पार्क और इसके आस पास का-क्षेत्र उत्तर पूर्व भारत में सबसे अधिक अनुकूल है। असम के निकटवर्ती आरक्षित वन और संरक्षित क्षेत्रों में जंगली हाथियों के प्राकृतिक प्रवासी मार्ग एवं कॉरिडोर हैं जो हाथियों को पीढ़ीपीढ़ी-दर- से उनकी आजीविका के प्रबंधन के लिए परेशानी मुक्त आवाजाही का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

वर्ष 2000 के बाद से असम में मानव-हाथी संघर्ष में बढ़ोतरी हुई है। हाथियों के प्राकृतिक आवासों पर बढ़ते मानव कब्जे, वनों के विखंडन और एलीफेंट कॉरिडोर के उचित प्रबंधन की कमी के कारण इन्हें भोजन की

तलाश में बाहर जाने के लिए मजबूर कर दिया है, जिससे मनुष्य के साथ संघर्ष होता है। यह चिन्ता की बात है।

'प्रोजेक्ट एलिफेंट' के माध्यम से केंद्र सरकार हाथियों के संरक्षण और प्रबंधन में मदद करती है और जंगलों में हाथियों की आबादी के अस्तित्व के लिए एलीफेंट कॉरिडोर और हाथियों के आवासों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करती है।

मुझे खुशी है कि राज्य सरकार ने भी मनुष्यों और हाथियों की सुरक्षा तथा समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण के लिए विभिन्न उपाय कर रही हैं, जिसमें एंटी डेप्रिडेशन ड्यूटी के लिए पर्याप्त समर्थन के साथ-रैपिड रेस्पोन्स टीम का गठन, प्रभावित लोगों को जंगली हाथी द्वारा किए गए नुकसान के लिए तत्काल मुआवजा राहत प्रदान करना आदि शामिल है।

अंत में मैं एक बार फिर भारत के माननीय राष्ट्रपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों तथा आयोजकों को उनके लगातार प्रयासों और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सक्रिय समर्थन के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।

इन कुछ शब्दों के साथ मैं हाथियों को बचाने और उनके आवास को बचाने के लिए सभी से पुरजोर अपील के साथ अपना भाषण समाप्त करता हूं।

धन्यवाद

'जय हिंद'